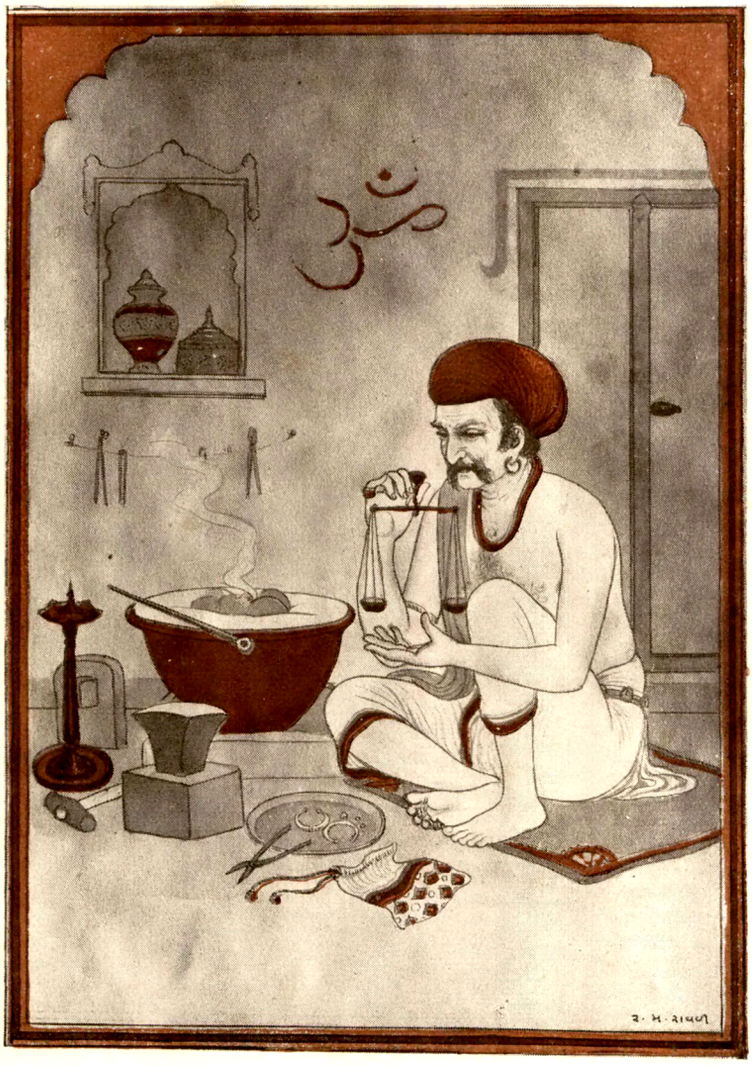

જ્ઞાની કવિ અખો ભગત

(ચિત્રકાર : રવિશંકર રાવળ)

સંસારાનુભવે ચોખ્ખા સીધા શબ્દ અખા વદે,
ચટેલું હેમવેદાન્ત કસોટી માંહ્ય સો ટચે.

'કુમાર' ચૈત્ર ૧૯૮૫ના અંકનું મુખચિત્ર

Introduction

गुजरात की ज्ञानमार्गी परंपरा की संक्षिप्त रूपरेखा[१]

संत अखा के काव्य में समुपलब्ध ज्ञान-भक्ति की परिपुष्ट एवं परिनिष्ठित परंपरा को अच्छी तरह से समझने लिए यह आवश्यक है कि उनके पूर्वकालीन - गुजरात की एतद्विषयक प्रवृतियाँ और परंपराओं की रूपरेखा स्पष्ट हो । गुजराती साहित्य के प्रसिद्ध भक्त कवि नरसिंह मेहता [सं०१४७२-१५३८ वि०] से लेकर संत अखा [सं०१६३२-१७२५ वि०] तक का समय खंड रूप से देखा गया है या तो बहुत ही अस्पष्ट रूप से । अत: गुजरात में ज्ञानभक्ति परंपरा को अखंड श्रृंखला की दृष्टि से यह समय कितना महत्वपूर्ण था, यह इतनी सरलता से नहीं कहा जा सकता ।

अखा का साहित्य वास्तव में गुजरात के ५०० वर्षों का इतिहास है क्योंकि नरसिंह मेहता से लेकर अखा के समय तक तथा अखा के पश्चात् सागर महाराज [सं०१९३९:१९९२ वि०] तक कोई भी ऐसा व्यक्तित्व गुजरात में प्रादुर्भूत नहीं हुआ जिनमें विक्रम की १५ वीं शती से प्रारंभ हुई भक्ति एवं ज्ञान की परंपरा को अंतिम रूप प्रदान करने की पूरी क्षमता हो । नरसिंह मेहता, भीम [सं० १५४१ वि० में विद्यमान], मांडण बंधारा, [विक्रम की १६ वीं

---

१. गुजरात में बहुधा सगुण ब्रह्म की भक्ति करनेवाले कवियों को " भक्त " एवं निर्गुण ब्रह्म की भक्ति करनेवाले कवियों को " ज्ञानी " कहा जाता है । इसके अतिरिक्त परब्रह्म को ज्ञानगम्य बतानेवाले स्वात्मज्ञानी कवियों की परंपरा को " ज्ञानमार्गी परंपरा " एवं उनके काव्य को " ज्ञानाश्रयी " काव्य कहने की परंपरा रही है । यहाँ उस परंपरा का स्वीकार कर गुजरात की संतधारा को " ज्ञान मार्गी परंपरा " कहा गया है ।

के प्रथम चरण में विद्यमान] समर्थदास [सं०१५५० :१६२० वि०], मीराँ [सं० १५५५ :१६०३ वि०], माधवदास [सं० १६०१ :१६५२ वि०] आदि महात्माओं की बानी में संप्राप्त भक्ति एवं ज्ञान की स्रोतस्विनियाँ संत अखा के समय तक अजस्र अवश्य रही किंतु साधना विशेष से समन्वित प्रस्तुत विचारधारा का स्पष्ट एवं व्यापक रूप हमें सर्व प्रथम अखा के अंदर दृष्टिगोचर होता है। अपनी विलक्षण प्रतिभा, बहुश्रुतता के साथ-साथ समर्थ भाषा-शैली के बल से अखा ने कबीर, नानक आदि उत्तर भारत के संतो द्वारा संपुष्ट संत धारा के साथ गुजरात की ज्ञान गंगा को एक रूप कर दिया। अतः अखा को समस्त संतधारा के पार्श्व में रखकर गुजरात की ज्ञानमार्गी परंपरा का प्रामाणिक एवं स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करने की आवश्यकता बनी हुई है।

यहां उपलब्ध सामग्री के आधार पर गुजरात में प्रादुर्भूत भक्ति एवं ज्ञान की धारा में मिले हुए विभिन्न अंतः स्रोतों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

१. हिन्दी के प्रथम संत कवि जयदेव द्वारा रचित गीत गोविंद के मंगलाचरण का श्लोक गुजरात के सारंगदेव वाघेला के राज्यकाल [सं०१३५८ वि०] में खुदे शिलालेखमें मिलता है[१]।

२. महानुभाव -पंथ के संस्थापक गुजरात के स्वामी चक्रधर [सं० १२५१:१३३१ वि०] ने राधा-कृष्ण भक्ति का उपदेश किया[२]।

३. गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित नाथ पंथ की प्रसिद्ध धर्मनाथ-पंथ की गद्दी गुजरात के कच्छ प्रदेश के धीनोधर स्थान में थी[३]। इसके अतिरिक्त १२ वीं १३ वीं

---

१. गुजराती साहित्यनुं रेखादर्शन : के०का०शास्त्री, पृ० ६८

२. उत्तर भारत की संत परंपरा : आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, पृ०८१

३. वही० पृ०५५

शती के गुजरात में निर्मित हिन्दू मंदिरों एवं अन्य दिवारों पर नाथ योगियों की मूर्तियां स्थापित की हुई मिलती है ।

४. दक्षिण के " वारकरी संतों " - नामदेव [सं०१३२०-१४०७ वि०] और ज्ञानदेव [सं०१३३२-१३५३ वि०] की रचनाओं में प्रचलित " विट्ठल शब्द,संबंध कारक " या " चो " प्रत्यय, उनके द्वारा व्यवहृत छंद, भजन एवं कीर्तन पद्धतियां तथा स्वीकृत " कृष्ण भक्ति " का प्रभाव गुजरात में विक्रम की १५ वीं के प्रारंभ से ही " नरसिंह महेता " भीम" आदि कवियों की रचनाओं में परिलक्षित होता है[१]।

५. विक्रम की १५ वीं शताब्दी के प्रथम चरण में जैन कवि जयशेखरसूरि कृत " त्रिभुवन दिपक " में आत्मा, माया, मन एवं जीवन की मुक्ति का रूप कात्मक वर्णन मिलता है[२]।

६. इस्लाम एवं सूफीमत के उपदेशक सयुयद ज़लालुद्दीन सुर्खपोश [सन् १२५६ :१३४८ ई०] की बानी का सिंध, गुजरात, पंजाब आदि में प्रचार था ।

७. मांडण भवैया [वि०सं०१४२७ वि० में विद्यमान] जैसे स्वतंत्र कवियों के द्वारा रचित ज्ञान का उपदेश करनेवाली जकड़ियां मिलती है[४]।

---

१. गुजराती साहित्यनुं रेखादर्शन : पृ० ७१ से ८०

२. गुजराती साहित्य [मध्यकालीन] : अनंतराय रावल, पृ० ७०-७१

३. उत्तर भारत की संतपरंपरा, पृ० ६७०

४. दृष्टव्य: प्रस्तुत प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में " अखाकृत जकडियाँ ।

८. स्वामी रामानंद [सं०१४५० वि० में विद्यमान] ने उत्तर भारत में जो भक्ति प्रचारित की उसका संदेश नरसिंह के समय गुजरात में पहुँच चुका था[1]।

इन सबके साथ-साथ विभिन्न तीर्थ-क्षेत्रों में घुमते रमते अनेक ज्ञात-अज्ञात संतों के "द्वारका", "गिरनार", "प्रभासपाटण" आदि तीर्थ क्षेत्रों की यात्रार्थ गुजरात में आवागमन करते रहने से यहाँ की धरित्रि उनकी चरणधुली से पावन होती रही।

उपर्युक्त विभिन्न स्रोतों से घनिभूत भक्ति एवं ज्ञान की अंत:सलिलायें अजस्र रूप में सर्व प्रथम "नरसिंह महेता" की रचनाओं में स्फुरित हुई। नरसिंह महेता जुनागढ के निवासी थे। उनके जीवन-प्रसंगों के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि वे गुजरात के ऐसे प्रथम कवि हैं जो जीवन के प्रारंभ से लेकर अंत तक एक मात्र पूर्ण एवं सच्चे भक्त रहे हैं। श्री कृष्ण को आलंबन बनाकर बही हुई उनकी भक्तिधारा में कवि ने अंतिम जीवन में स्वानुभूत ब्रह्मज्ञान का भी रंग घुला मिला हुआ है।

"निरखने गगनमां कोण घुमी रह्यो"

"जागीने जोऊं तो जगत दीसे नहीं"

"अखिल ब्रह्मांडमां एक श्रीहरी, जुजवे रूपे अनंत भासे",

आदि पदों में उनके आत्मानुभव की बानी आविर्भूत हुई है[2]। इन्हीं पदों के कारण नरसिंह महेता को गुजरात का प्रथम संत कवि कहा जा सकता है।

---

१. गुजराती साहित्यनुं रेखादर्शन, पृ० ८०

२. नरसिंह महेता कृत काव्य - संग्रह : संपा० इच्छाराम देसाई

आदि की भक्ति, ज्ञान एवं स्वानुभवपूर्ण रचनाओं से द्रुतगति से आगे बढ़कर "रामभक्त" [रचनाकाल सं०१६६० वि०][1] के "श्रीमद् भागवत गीता", "योग वासिष्ठ महारामायण" एवं "कपिल मुनिनुं आख्यान", बड़ौदा निवासी नरहरि [रचनाकाल सं० १६७२-१७००[2] वि०] के "ज्ञान गीता", "वसिष्ठसार" "भवगद्गीता", हस्तामलक, सूरतनिवासी "भगवानदास कायस्थ" [रचनाकाल सं० १६८१-१७४६ वि०][3] के "श्रीमद्भागवत् गीता, भागवत के एकादश स्कंध तथा अहमदाबाद निवासी गोपाल [रचनाकाल सं०१७०५ वि०[4]] के "गोपाल गीता" आदि प्रबंध-काव्यों से संपुष्ट होती हुई संत अखा की हिन्दी एवं गुजराती दोनों भाषाओं में निर्मित मुक्तक एवं प्रबंध रचनाओं की विपुल राशी से विशालता, विविधता एवं गहराई को प्राप्त हुई।

संत अखा के पश्चात् की संत धारा का परीक्षण श्री कें०का०शास्त्री ने अपने "उत्तर भक्ति ज्ञानी ज्ञानाश्रयी कविता" नामक लेख में किया है[5]। आलोच्य युग खंड में सूफी संत कवि सागर महाराज तक की प्रस्तुत परंपरा में कवियों की संख्या ५० से भी अधिक है। यहां उनमें से केवल एक प्रमुख संत कवियों का उल्लेख

---

१. कविचरित, भाग १-२ :: कें० का०शास्त्री, पृ० ४३०

२. नरहरिनी ज्ञानगीता :: डॉ०सुरेश जोशी [अप्रकाशित शोध-प्रबंध]

३. कविचरित :: पृ० ४६७

४. नरहरिनी ज्ञानगीता :: डॉ० सुरेश जोशी

५. "आराम" का दीवाली अंक, सं०२००५

किया गया है । ऐसे संत कवियों में संत अखा के शिष्य लालदासजी [सं०१७१० वि० में विद्यमान] सर्वप्रथम उल्लेखनीय है । लालदास जी तथा इनके शिष्य- प्रशिष्य[1] " हस्तामलक ", अजगर-अवधूत संवाद " आदि ग्रंथों के रचयिता एवं " गुजरात के प्रथम गरबीकार संत भाणदास " [रचनाकाल सं०१७१५ वि०[2]], गोरक्षाचरित एवं " कबीर चरित " के रचयिता " मुकुंद गुगली " [रचनाकाल सं० १७०८ वि०[3]] ज्ञानगीता, " " ज्ञानमूल " आदि वेदांत विषयक ग्रंथों के रचयिता " जगजीवन " [सं० १७७२ वि० में विद्यमान[4]], शिवगीता ", " ब्रह्मगीता " आदि गीता काव्यों के साथ-साथ वेदांत विषयक " विष्णुपदों " की रचना करनेवाले " अनुभवानंद " [सं० १७८८ वि० में विद्यमान[5]] " ब्रह्मलीला ", भक्तमाल " आदि प्रबंध काव्यों एवं विभिन्न अंगों में विभाजित सैंकडों साखियों के सर्जक संत कवि प्रीतम [सं० १७७४-१८५४ वि०[6]] अपनी " काफियों " के लिए गुजराती में प्रसिद्ध संत धीरा [सं०१८०९ -१८८१ वि०[7]], " निरांत संप्रदाय " के संस्थापक निरांत महाराज [सं० १८०३-१९०८ वि०[8]], तथा बापु साहब गायकवाड [सं०१८३३- १८९९ वि०[9]]

---

१. अखा अने मध्यकालीन संत परंपरा : डा०योगीन्द्र त्रिपाठी

२. कवि चरित : के० का०शास्त्री, पृ. ५-६७.

३. मुकुन्द कृत कविता : प्रा०का०मा०ग्रंथ ११

४. उत्तर भक्तियुगनी ज्ञानाश्रयी कविता : के०का०शास्त्री

५. नरहरिनी ज्ञानगीता : डा० सुरेश जोशी सन् १९६३

६. प्रीतमनी वाणी भाग १-२-३. प्रका०स०सा०अहमदाबाद

७. धीरा कृत कविता : प्रा० का०मा० ग्रंथ २३-२४-२५ संपा०हरगोविंददास कांटावाला

८. निरांत कृत कविता : संपा० नटवरलाल पुरोहित

९. बापुसाहब कृत कविता : प्रा०का०मा० ग्रंथ

भोजा भगत, [सं०१८४० -१९०६[१] वि०], मनोहर स्वामी [सं०१८४४-१९०१[२]] छोटम [सं०१८९९-१९४१[३] वि०], अर्जुन भगत [सं०१९०६-१९५६[४] वि०], सागर महाराज [सं०१९३९-१९९२[५] वि०] आदि संत कवियों की हिन्दी एवं गुजराती भाषाओं में निर्मित योग, ज्ञान, भक्ति, प्रेम एवं स्वानुभवपूर्ण मुक्तक एवं प्रबंध रचनाओं के द्वारा गुजरात की संत धारा उत्तरोत्तर विकास के पंथ की ओर अग्रसर अवश्य होती रही किंतु जैसा कि प्रारंभ में ही बताया गया है गुजरात में संत कवि अखा के अतिरिक्त ऐसा समर्थ व्यक्तित्वपूर्ण अन्य कोई कवि नहीं जन्मा जिन्हों ने " गुजरात की संत परंपरा " को विशिष्ट रूप प्रदान किया हो । एक मात्र संत अखा ही ऐसे संत थे जिन्हों ने अपने महान व्यक्तित्व, स्वानुभूत आत्मज्ञान एवं समर्थ भाषा-शैली के बल से गुजरात की संत परंपरा को केवल विशिष्ट रूप ही प्रदान नहीं किया प्रत्युत उसे भारतीय संत परंपरा के साथ उसकी एक अविच्छिन्न कड़ी के रूप में जोड़ भी दिया ।

---

१. भोजा कृत कविता : प्रा०का०मा० ग्रंथ-५

२. मनहर पद : संपा० महादेव देसाई

३. छोटमनी वाणी: भा०१-२-३-४ प्रका० स०सा०सन् १९२६

४. अर्वाचीन कविता : सुन्दरम् सन, १९५३ पृ० ४९९ -५०५

५. कवि चिंतक एवं गद्यकार सागर : डॉ० अनिलकुमार त्रिपाठी